तारतम रस पाई करी, साथ घेर पोहोंचाडूं।
धंन धंन कहिए तारतम, जेणे थयूं अजवालूं।। १३८ ।।

तारतम वाणी का रस (ज्ञान) पिलाकर सुन्दरसाथ को घर (परमधाम) पहुंचा दूंगी। इसलिए यह तारतम वाणी धन्य-धन्य है, जिससे ज्ञान का उजाला हुआ।

ए अजवालूं साथने, रामत जोवा लाव्या।
बीजा बंधाणा बंधसूं, विध विधनी माया।। १३९ ।।

इस तारतम के उजाले में सुन्दरसाथ को खेल दिखाने के लिए लाई हूं। दूसरे जीव माया के तरह-तरह के बन्धनों से बंधे पड़े हैं।

बीजा त्रीजा हूं तो कहुं, जो साथने माया थइ भारी।
साथ सुपन जुए सत करी, तो हूं कह्यूं विचारी।। १४० ।।

दूसरा और तीसरा मुझे इसलिए कहना पड़ रहा है कि सुन्दरसाथ माया में फंसे पड़े हैं। अब सुन्दरसाथ माया को ही सत (सत्य, अखण्ड) समझ कर देख रहे हैं, इसीलिए मैं विचार करके कहती हूं।

विचारी सुपन मुकाविए, तो थाय बंने पेर।
सुख ते सुपने जोइए, हरखे जागिए घेर।। १४१ ।।

विचार करके स्वप्न को छुड़ाएं तो दोनों काम बन जाएं। सपने के सुख भी देख लें और हंसते हुए घर में भी उठें।

तारतम पख बीजो कोई नथी, साथ विना सहु सुपन।
जगवुं माया खोटी करी, धाख रखे रहे मन।। १४२ ।।

तारतम वाणी से विचार कर यदि देखें तो सुन्दरसाथ के अलावा सब स्वप्न है, इसलिए माया के झूठ की पहचान कराकर सुन्दरसाथ को जगाऊं, ताकि सुन्दरसाथ के मन में चाहना न रह जाए।

ते माटे पेर बंने करूं, सुपन हरखे समावूं।
चरणे लागी कहे इंद्रावती, साथ जुगते जगावूं।। १४३ ।।

सुन्दरसाथ के चरणों में लगकर श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मैं इन दोनों युक्तियों के साथ सुन्दरसाथ को जगाऊंगी कि वह सपने के सुख भी देख लेंगे और हंसते-गाते घर में भी उठेंगे।

।। प्रकरण ।। ३१ ।। चौपाई ।। ९३६ ।।

दूध पाणीनो विछोडो

वली वण पूछे कहूं विचार, कारण साथ तणे आधार।
रखे केहेने उत्कंठा रहे, श्री सुन्दरबाई ते माटे कहे।। १ ।।

सुन्दरसाथ के वास्ते बिना पूछे ही श्री श्यामाजी (सुन्दरबाई) कह रही हैं ताकि किसी का संशय न रहे।

आगे एम वचन केहेवाय, जे कीडी पग कुंजर बंधाय।
डूंगरतां त्रणे ढांकियो, पाधरो प्रगट कोणे नव थयो।। २ ।।

आगे ऐसा कहा जाता है कि चींटी के पैर में हाथी बंध गया और कहते हैं कि तिनके ने पहाड़ को ढांप लिया है, किन्तु किसी ने भी इसका भेद नहीं खोला।

Nijanand App

कीडी कुंजरने बेठी गली, तेहेनी तां कोणे खबर न पडी।
केहेने तो कहूं छूं एम, जे माया भारे थइ छे तेम।। ३ ।।

चींटी हाथी को खा गई, इसकी जानकारी भी किसी को नहीं हुई। हे सुन्दरसाथ! मैं तुम्हें कहने के लिए शब्द से सम्बोधन इसीलिए करती हूं कि तुमको माया बहुत अच्छी लगी है।

सनकादिक ब्रह्माने कहे, जे जीव मन बेहू भेला रहे।
ते जुजवा करीने देयो, सनकादिके एम प्रश्न कह्यो।। ४ ।।

सनकादिक ब्रह्मा से पूछते हैं कि जीव और मन क्या इकट्ठे रहते हैं? यह हमें अलग करके बताओ।

त्यारे ब्रह्मा मन विमास्या रही, मन मांहें अति चिंता थई।
ए पडउत्तर हूं थी नव थयो, त्यारे वैकुंठनाथने सरणे गयो।। ५ ।।

तब ब्रह्माजी मन में विचारने लगे और उनके मन में अधिक चिन्ता हो गई और बोले इस प्रश्न का उत्तर मेरे से नहीं होगा। तब सनकादिक बैकुण्ठनाथ की शरण में गए।

भगवानजी त्यारे तेणे ताल, हंस रूप लाव्या तत्काल।
हंसजीने जीवे ओलख्यूं, त्यारे मन आडो फरीने वल्यूं।। ६ ।।

भगवान विष्णु ने तुरन्त हंस का रूप धारण किया। जीव ने हंस रूप को पहचान लिया कि यह साक्षात् भगवान हैं (और उनके चरणों में लगकर प्रणाम किया)। उसके बाद मन ने परदा डाला।

सनकादिके एम पूछ्यूं वचन, जीवने चांपी बेठो मन।
त्यारे हंसजीए कीधो जवाब, समझया सनकादिक भाग्योवाद।। ७ ।।

सनकादिक ऋषियों ने इस तरह पूछा कि क्या मन जीव को दबाकर बैठा है? तब हंस (विष्णु भगवान) ने जवाब दिया, तुम्हारा (सनकादिक ऋषियों) संशय मिट गया। तुम समझ गए?

वाधे भारे समझाविया, पण दूध पाणी नव जुजवा थया।
तेहेनो तमसुं करूं जवाब, समझावाने काजे साथ।। ८ ।।

इस तरह से भगवान विष्णु ने इशारे से समझा दिया, किन्तु दूध और पानी (जीव और आत्मा) का भेद नहीं खुला है, इसलिए सुन्दरसाथ को समझाने के वास्ते मैं जवाब देता हूं।

समझीने ओलखो धणी, चालो आपणे घरज भणी।
ए चारेनो अर्थज एह, रखे कांई तमने रहे संदेह।। ९ ।।

हे सुन्दरसाथजी! समझकर अपने धनी को पहचानो और अपने घर की तरफ चलो। इन चारों का यह एक अर्थ है [(१) चींटी हाथी को खा गई, (२) तिनके ने पर्वत को ढांप लिया (३) जीव और मन इकट्ठे हैं या अलग, (४) चींटी के पांव से हाथी बंधा है।] तुम्हें कोई संशय नहीं रह जाए इसलिए कहा है।

एहेनो जे जोतां अर्थ, तेहेने जवाब एम देता ग्रन्थ।
अकल अगम वैकुंठनो धणी, ए थोडी हजी करे घणी।। १० ।।

इनका जो अर्थ समझते हैं, उनका जवाब सांसारिक ग्रन्थ इस प्रकार देते हैं कि बैकुण्ठ के भगवान विष्णु बुद्धि में सबसे बड़े हैं। वह थोड़े में ही अधिक करके समझा देते हैं।

Nijanand App

एह करता सर्वे थाय, पण ओल्यूं अर्थ ते तणाण्यूं जाय।
अर्थ उत्कंठा रहे मन मांहें, समझ कोणे नव पडे क्याहें।। ११ ।।

इनके करने से सब कुछ होता है, पर वह खुलासा कर समझाते नहीं, इसलिए विचारों में खेंचा-खेंच (खींचतान) होती है और मन में अर्थ जानने की चाहना बनी रहती है। किसी को अर्थ समझ में नहीं आता।

हवे समझावुं जोजो वाणी, दूध विछोडा करी दऊं पाणी।
जो जीव साख पूरे आपणो, अर्थ खरो तो तारतम तणो।। १२ ।।

अब श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि अब मैं समझाती हूं। तुम मेरी वाणी को सुनना। मैं दूध और पानी (जीव और आत्मा) को अलग-अलग कर देती हूं। तारतम वाणी से अर्थ स्पष्ट हो जाता है और जीव का संशय मिट जाता है (स्वयं साक्षी देता है)।

हवे संभारजो जीवसुं वात, जीव तणो मोटो प्रकास।
चौद भवन अजवालूं करे, जो जीव जीवनने रुदे धरे।। १३ ।।

अब जीव की बात को याद करो। जीव का ज्ञान बड़ा है। यह चौदह लोकों में तब उजाला करता है जब जीव अपने परमात्मा को हृदय में धारण करे।

एह छे एवो समरथ, एहेना बलनो कहीस अर्थ।
नहीं राखूं संदेह लगार, जाणी साथ घरनो आधार।। १४ ।।

यह कितना बलवान है इसकी ताकत का मैं बयान करती हूं। सुन्दरसाथ को अपने घर का समझकर जरा भी संशय नहीं रहने दूंगी।

मन तणूं नथी कांई मूल, तेथी भारे आंकडा नूं तूल।
एक अरधी पांखडी नथी जेटलो, पण पग थोभ माटे कह्यो एटलो।। १५ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मन का कुछ (कोई) भी रूप नहीं है। मन से बड़ा तो आक की रुई का फूहा (भुआ) होता है। उस भुए के आधी पंखुड़ी के बराबर भी मन नहीं होता, परन्तु सबके ऊपर पैर जमाकर बैठा है, इसलिए ऐसा कहा है।

ते बेठो जीवने ऊपर चढी, कीडी कुंजर एम बेठी गली।
एम त्रणे डूंगर ढांकयो, एम गज कीडी पग बांधयो।। १६ ।।

यह मन जीव के ऊपर चढ़कर बैठ गया है। इस तरह से यह मन रूपी चींटी हाथी रूपी जीव को खा गई और इसी प्रकार मन रूपी तिनके ने पहाड़ के समान जीव को ढांप लिया है तथा इस तरह हाथी की तरह जीव चींटी की तरह मन के पैर में बंध गया है।

जो जीव पोते करे अजवास, तो मने नव खमाय प्रकास।
ते ऊपर कहूं द्रष्टांत, जोजो पोतानू वृतांत।। १७ ।।

यदि जीव अपने बल पर चले तो मन का कुछ भी नहीं चलता। इसके ऊपर एक दृष्टान्त कहती हूं, जिससे अपनी हकीकत समझना।

सुकजीना कह्या प्रमाण, सात सागरनो काढ्यो निरमाण।
भव सागरनो न आवे छेह, सुकजी एम पाधरूं कहे।। १८ ।।

शुकदेवजी के वचनों में सात सागर का वर्णन किया गया है। वह भी स्पष्ट कहते हैं कि भवसागर का किनारा ही नहीं मिलता।

Nijanand App

हवे पगला जे भरिया प्रमाण, जोजो जीव तणूं बल जाण।
पेहेले फेरे आपण नीसर्‌यां, भवसागर ते केम करी तर्‌यां।। १९ ।।

अब जो प्रमाण देती हूं, उससे जीव के बल को देखो। पहली बार ब्रज से रास में जाते समय हम निकले थे तो भवसागर कैसे पार किया था।

जेनो नव काढ्यो निरमाण, सुकजीना वचन प्रमाण।
गोपद वछ वली सुकजीए कह्यो, भवसागर एम साथने थयो।। २० ।।

शुकदेवजी के वचनों में इसका खुलासा नहीं किया। शुकदेवजी ने भवसागर को गाय के बछड़े के पांव के आकार का गड्ढा कह दिया।

एटलो पण नथी द्रष्टे पड्यो, पग थोभ माटे पुस्तक चढ्यो।
जीव तणो जोजो ए बल, खरी वस्त जे कही नेहेचल।। २१ ।।

इतना भी उनकी नजर में नहीं आया, परन्तु समझाने के लिए सागर का रूप पुस्तक भागवत में लिख दिया। जीव की शक्ति देखो। यह खरी वस्तु है, सच्ची वस्तु है। जीव को भागवत में अखण्ड कहा है।

भवसागर केम एटलो थयो, जो जीव खरे जीवनजी ग्रह्यो।
त्यारे मन एकलो बेसी रह्यो, खोटो मन खोटामां भल्यो।। २२ ।।

गोपियों को भवसागर इतने छोटे आकार का क्यों हो गया? इसलिए कि उनके जीवों ने अपने वालाजी को पहचान कर ग्रहण (पकड़) कर लिया था। उस समय मन अकेला बैठा रहा। माया का मन माया में मिल गया।

दूध लीधूं एम जुओ करी, पाणीने मूक्यूं परहरी।
दूध पाणीनो जुओ विचार, जुआ करी ओलखो आधार।। २३ ।।

इस तरह से जीव को (दूध को) मन (पानी) से अलग कर लिया और मन (पानी) को छोड़ दिया। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि दूध और पानी का विचार कर देखो और अपने धनी की पहचान करो।

आपण मांहें बेठा छे सही, चरण कमल रेहेजो चित ग्रही।
भरम भाजी ओलखजो धणी, दया आपण ऊपर अति घणी।। २४ ।।

धनी जो अपने बीच में बैठे हैं, उनके चरण कमल को अपने हृदय में रखो। अपने संशय मिटाकर धनी की पहचान करो। हमारे ऊपर धनी की अत्यन्त कृपा है।

इंद्रावती कहे ओलखो आधार, तारतम जीवसूं करो विचार।
सुफल फेरो थाय संसार, वली वली नहीं आवे आवार।। २५ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि अपने प्रीतम को पहचानो। तारतम से विचार कर जीव को दृढ़ करो जिससे यह तुम्हारा फेरा सफल हो जाए। फिर ऐसा अवसर बार-बार नहीं आयेगा।

।। प्रकरण ।। ३२ ।। चौपाई ।। ९६१ ।।

Nijanand App